प्रस्तावना

श्रीमद्भगवद्गीता भारत के प्राचीन आध्यात्मिक ग्रन्थों में महानतम् है। अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापकाचार्य श्रील प्रभुपाद ने भगवद्गीता का अनुवाद मूलत: १९६७ ई. में किया, प्रत्येक श्लोक को प्रकाशदायी व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया। पश्चिमी जगत में हाल ही में आने के कारण, वे उस समय पुस्तक का मुद्रण कराने में अक्षम थे। इस कारण भगवद्गीता का जो परिचय उन्होंने लिखा था, उसका पहले अलग से एक पुस्तिका के रूप में मुद्रण हुआ। यह पुस्तिका उस परिचय का पुनर्मुद्रण है। पाठक इसमें भगवद्गीता के दर्शन का सम्पूर्ण विवरण स्पष्ट व निर्भीक रूप में पायेंगे। यह परिचय उन लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण है, जो भगवद्गीता में पहली बार रुचि ले रहे हैं। श्रील प्रभुपाद ने दूसरी प्रस्तुतियों व अनुवादों से भिन्न व्यक्तिगत मनोधर्म तथा व्याख्या से मुक्त भगवद्गीता यथारूप को प्रस्तुत किया। वे हमारा ध्यान कृष्ण द्वारा गीता में दिये गये वास्तविक संदेश पर केन्द्रित करते हैं। इन समस्त कारणों के साथ हम लोगों को विश्वास है कि आप भगवद्गीता के इस परिचय को प्रबोधन करने वाला और व्यक्तिगत परिवर्तन में सहायक पायेंगे।

—प्रकाशक